NEXT IAS

दैनिक संपादकीय विश्लेषण

विषय

भारत के लिए वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला पुनर्संयोजन में अवसर

---

www.nextias.com

भारत के लिए वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला पुनर्संयोजन में अवसर

संदर्भ

- हाल के वैश्विक आघात जैसे **रूस-यूक्रेन युद्ध** और **मध्य पूर्व तनाव** ने उन संरचनात्मक कमजोरियों को उजागर किया है, जो दक्षता और लागत न्यूनकरण पर आधारित वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं में निहित थीं।
- अब **लचीलापन (Resilience)** दक्षता जितना ही महत्वपूर्ण हो गया है, क्योंकि उत्पादन कम लागत वाले क्षेत्रों, विशेषकर पूर्वी एशिया में केंद्रित है।

वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाएँ क्या हैं?

- वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाएँ उत्पादन, वितरण और व्यापार के अंतरराष्ट्रीय नेटवर्क को संदर्भित करती हैं, जहाँ:
  - उत्पादन के विभिन्न चरण अलग-अलग देशों में होते हैं।
  - देश तुलनात्मक लाभ के आधार पर विशेषज्ञता प्राप्त करते हैं।
  - वैश्वीकरण, व्यापार उदारीकरण और प्रौद्योगिकी द्वारा सक्षम।
- इन्हें **वैश्विक मूल्य श्रृंखलाएँ (Global Value Chains – GVCs)** भी कहा जाता है।**प्रमुख विशेषताएँ:**
  - उत्पादन का विखंडन (बहु-देशीय उत्पादन)
  - **जस्ट-इन-टाइम (JIT)** प्रणाली (न्यूनतम भंडारण)
  - अति-विशेषीकरण (क्षेत्रीय प्रभुत्व)
  - परस्पर निर्भरता (अर्थव्यवस्थाओं के बीच गहन संबंध)
    - ये विशेषताएँ दक्षता बढ़ाती हैं, लेकिन आघातों को सहने की क्षमता घटाती हैं।
- **वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं में मौलिक परिवर्तन:**
  - भू-राजनीतिक संघर्षों से ऊर्जा, वस्तुओं और लॉजिस्टिक्स बाधित।
  - व्यापार का हथियारकरण (प्रतिबंध, निर्यात नियंत्रण) से अनिश्चितता बढ़ी।
  - COVID-19 ने एकल भौगोलिक क्षेत्रों पर अत्यधिक निर्भरता उजागर की।
- भू-राजनीतिक जोखिम और केंद्रित आपूर्ति श्रृंखलाएँ प्रणालीगत संवेदनशीलता को बढ़ाती हैं, जिससे कंपनियों को अपने स्रोत नेटवर्क का विविधीकरण करने और निर्भरता कम करने के लिए बाध्य होना पड़ता है।
- अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) ने चेतावनी दी है कि व्यापार विखंडन से वैश्विक GDP में लगभग 7% की कमी हो सकती है, जो विभाजित वैश्विक व्यवस्था की आर्थिक लागत को उजागर करता है।

भू-राजनीतिक विखंडन और उसके निहितार्थ

- वैश्वीकरण समाप्त नहीं हो रहा, बल्कि क्षेत्रीय और सामरिक खंडों में विभाजित हो रहा है।
  - महत्वपूर्ण संकुल बिंदुओं (जैसे हॉर्मुज़ जलडमरूमध्य, लाल सागर) में व्यवधान।
  - **फ्रेंड-शोरिंग** और **नियर-शोरिंग** का उदय।
  - व्यापार नीति में राष्ट्रीय सुरक्षा की बढ़ती भूमिका।
- आपूर्ति श्रृंखलाओं को अब केवल वाणिज्यिक प्रणाली नहीं, बल्कि सामरिक संपत्ति माना जा रहा है।

भारत एक वैकल्पिक आपूर्ति श्रृंखला केंद्र के रूप में

- **बड़ा घरेलू बाजार**: निर्यात से पहले पैमाने की अर्थव्यवस्था सक्षम करता है।
- **जनसांख्यिकीय लाभांश**: पूर्वी एशिया की वृद्ध होती अर्थव्यवस्थाओं की तुलना में युवा कार्यबल।
- **राजनीतिक स्थिरता और संस्थागत ढाँचा**: लोकतांत्रिक प्रणाली नीति पूर्वानुमेयता और कम भू-राजनीतिक जोखिम सुनिश्चित करती है।
- **रणनीतिक स्वायत्तता**: अनेक भू-राजनीतिक खंडों से जुड़ने की क्षमता।
  - भारत की **भू-राजनीतिक तटस्थता** और **बाजार आकार** आपूर्ति श्रृंखला पुनर्स्थापन को आकर्षित कर रहे हैं।

भारत के प्रयास

- **PLI योजना की भूमिका**: 14 क्षेत्रों (इलेक्ट्रॉनिक्स, फार्मा, सौर, ऑटो आदि) को कवर करती है।
  - प्रोत्साहन को अतिरिक्त उत्पादन से जोड़कर प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ाई।
- **व्यापार समझौते और निर्यात प्रोत्साहन**:
  - UAE, ऑस्ट्रेलिया, UK, EU (प्रगति पर), USA के साथ समझौते।
  - इलेक्ट्रॉनिक्स, वस्त्र, इंजीनियरिंग वस्तुओं के निर्यात को बढ़ावा।
- **लॉजिस्टिक्स सुधार**: PM गति शक्ति, राष्ट्रीय लॉजिस्टिक्स नीति।
- **SCRI (आपूर्ति श्रृंखला सुदृढ़ता पहल)**: भारत, जापान और ऑस्ट्रेलिया की त्रिपक्षीय साझेदारी।
  - एकल स्रोत आपूर्तिकर्ताओं पर निर्भरता कम करना।
  - डिजिटल तकनीक का उपयोग और सर्वोत्तम प्रथाओं का साझा करना।

केस स्टडी: भारत का इलेक्ट्रॉनिक्स विनिर्माण

- मोबाइल निर्माण इकाइयों और स्मार्टफोन निर्यात में वृद्धि।
- वैश्विक कंपनियाँ चीन से परे विविधीकरण कर रही हैं।
- भारत बैक-ऑफिस अर्थव्यवस्था से विनिर्माण केंद्र की ओर संक्रमण कर रहा है।

अवसर को बढ़ाने की चुनौतियाँ

- **बुनियादी ढाँचे की कमी**: कुशल बंदरगाह, लॉजिस्टिक्स कॉरिडोर और क्लस्टर।
- **श्रम और नियामक मुद्दे**: श्रम-प्रधान क्षेत्रों में सुधार की आवश्यकता।
- **कौशल विकास**: उन्नत विनिर्माण और इंडस्ट्री 4.0 हेतु।
- **पारिस्थितिकी तंत्र विकास**: आपूर्ति श्रृंखलाएँ नेटवर्क पर निर्भर करती हैं, केवल कारखानों पर नहीं।

निष्कर्ष

- विश्व वैश्विक व्यापार और उत्पादन नेटवर्क के संरचनात्मक पुनर्गठन का साक्षी है।
- भारत के पास एक ऐतिहासिक अवसर है कि वह वैश्विक विनिर्माण केंद्र के रूप में उभरे, क्योंकि आपूर्ति श्रृंखलाएँ दक्षता से लचीलापन की ओर बढ़ रही हैं।

- सफलता तीव्र बुनियादी ढाँचा विकास, गहन व्यापार एकीकरण और सुदृढ़ औद्योगिक पारिस्थितिकी तंत्र पर निर्भर करेगी।
- यदि प्रभावी रूप से क्रियान्वित किया जाए, तो भारत वैश्वीकरण के आगामी चरण में एक **केंद्रीय नोड** बन सकता है।

Source: BL

दैनिक मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

प्रश्न: भारत की संभावनाओं का परीक्षण कीजिए कि वह चल रहे वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला पुनर्संयोजन में एक वैश्विक विनिर्माण केंद्र के रूप में कैसे उभर सकता है। इस अवसर को पूर्ण रूप से साकार करने के लिए किन संरचनात्मक सुधारों की आवश्यकता है?

NEXT IAS